इमाम जाफ़रे सादिक़ (अ0)

आयतुल्लाहिल उज़्मा सैय्यदुल उलमा सैय्यद अली नक़ी ताबा सराह

विलादतः– **17 रबीउलअव्वल 83 हिजरी**
शहादतः– **15 शव्वाल 148 हिजरी**

आपका दौर इंक़िलाबी दौरथा। वह बीज बनी उमैय्या से नफ़रत के जो हज़रत इमामे हुसैन (अ0) की शहादत ने दिलो दिमाग़ की ज़मीन में बो दिये थे अब पूरी तरह फल देने वाले हो रहे थे, उमवी तख़्ते सलतनत को ज़लज़ला था और उमवी ताक़त रोज़ बरोज़ कमज़ोर हो रही थी इस दौर में बार–बार ऐसे मौक़े आते थे जिनमें कोई जज़्बाती आदमी होता तो फौरन हवा के रुख़ पर चला जाता और इंक़िलाब के वक़्ती फाएदों से फाएदा उठाने के लिए ख़ुद भी इंक़िलाबी जमात के साथ जुड़ जाता। फिर जबकि इसी के साथ ऐसे असबाब भी मौक़े–मौक़े से पैदा होते थे। जो बनी उमैय्या के ख़िलाफ उसके जज़्बात को भड़काने वाले हों।

ज़ैद बिन अली बिन हुसैन (अ0) हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ (अ0) के चचा थे ख़ुद भी इल्म व तक़वे में एक बुलन्द शख़्सियत वाले थे। यह बनी उमैय्या के ख़िलाफ खड़े होते हैं और वह भी हज़रत इमामे हुसैन (अ0) के ख़ून का बदला लेने के एलान के साथ। यह क्या ऐसा मौक़ा न था कि हज़रत इमामे जाफर सादिक़ भी चचा के साथ इस मुहिम में शरीक हो जाएँ। फिर इसके बाद ज़ैद (अ0) का शहीद किया जाना और उन पर वह ज़ुल्म कि दफ़्न के बाद लाश को क़ब्र से निकाला गया और सर को काटने के बाद जिस्म बे सर को एक ज़माने तक सूली पर चढ़ाए रखा था फिर आग में जला दिया गया। इस के असर आम इन्सानी तबीयत में खलबली पैदा कर सकते हैं?

और फिर अब्बासियों के हाथ से इंक़िलाब की कामियाबी और सलतनते बनी उमैय्या की ईंट से ईंट बज जाना।

इस तमाम दौरे इंक़िलाब में हर दिन नए–नए मामले और अलग–अलग नफ्सानी बातें हैं जो एक इंसान को मुतहर्रिक बनाने के लिए काफ़ी हैं ख़ास तौर से इसलिए कि बनी अब्बास को हुकूमत की कुर्सी पर बिठाने वाला अबुसलमा ख़िलाल औलादे फातमा ज़हरा (स0) की मुहब्बत के साथ इतना मशहूर था कि इक़्तेदार में आने के लिए इमाम जाफ़रे सादिक़ (अ0) के पास तहरीरी गुज़ारिश भेजी मगर आप ने इससे न सिर्फ यह कि नज़र फेर ली बल्कि इस काग़ज़ को उस शमा की लौ के हवाले कर दिया जो उस वक़्त रौशन थी। और क़ासिद से फरमाया कि इस तहरीर का बस यही जवाब है और फिर इस पूरे लम्बे दौरे इंक़िलाब में एक दिन ऐसा नहीं आया जो हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ (अ0) में कोई हरकत पैदा कर सका हो। सिवाए उलूमे अहलेबैत (अ0) की हिफाज़त और फैलाव की उस मुहिम के जिसकी खुलकर शुरुआत आप के बुज़ुर्ग बाप ने कर दी थी। और अब इसी को अपनी लम्बी उम्र की निस्बत से और उस वक़्त के इंक़िलाबी हालात के मौक़े से फाएदा उठाकर पूरे तौरसे फैलाने का मौक़ा हज़रत इमाम जाफर सादिक़ (अ0) को मिला। जिसके नतीजे में मज़हबे अहलेबैत अवाम में ''मिल्लते जाफरी'' के नाम से याद किया जाने लगा।

यह क्या था? यह वही जज़्बात से बुलन्द होने का क़तई मुशाहेदा है जिसे ''मेराजे इन्सानियत'' की हैसियत से हम उनके तमाम पहले वाले बुज़ुर्गों में देखते रहे हैं।

बनी अब्बास के तख़्ते सलतनत पर बैठने के बाद कुछ दिन तो औलादे रसूल (स0) को सुकून रहा मगर मन्सूर दवानेक़ी के तख़्ते सलतनत पर बैठते ही फिर फिज़ा ख़राब हो गई और चूँकि यक़ीन था कि बनी उमैय्या को जो हमने शिकस्त दी है वह औलादे फ़ातिमा (स0) के साथ हमदर्दी ही से फाएदा उठाकर। इसलिए यह अन्देशा था कि न जाने कब अवाम की आँखें खुल जाएँ और वह उसी तरह झुक जाएँ। ख़ासकर इसलिए कि बनी उमैय्या के ज़वाल के आसार सामने आने के बाद जब बनी हाशिम ने मदीने में जमा होकर एक मज्लिसे मुशाविरत की कि इंक़िलाब के पूरा होने के बाद तख़्ते सलतनत किसके हवाले दिया जाए तो सबने हसने मुसन्ना इमामे हसन के बेटे के पोते मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह को इस मनसब का अहल क़रार दिया था और सबने उनके हाथ पर बैअत की थी। इस जलसे में मन्सूर भी मौजूद था और उसने भी मुहम्मद के हाथों पर बैअत की थी इसके बाद सियासी तरकीबों से इस कारवाई को बेकार करके बनी अब्बास तख़्ते ख़िलाफत पर क़ाबिज़ हो गए इसलिए बहुत बड़ा काँटा जो मन्सूर के दिल और आँख में खटक रहा था वह मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह का वजूद था इसका नतीजा यह था कि इक़तेदार में आने के बाद ख़ास तौर से औलादे इमामे हसन (अ0) के ख़िलाफ जुल्म व सितम शुरु कर दिया गया।

अब्दुल्लाह बिन हसन (अ0) जो अब्दुल्लाह अलमहज़ के नाम से मशहूर थे। इमामे ज़ैनुलआबिदीन के भाँजे यानी फातिमा बिन्ते हुसैन (अ0) के बेटे थे और मुहम्मद उनके बेटे जो अपने तक़वे (परहेज़गारी) की बुनियाद पर नफ़्से ज़किय्यः के नाम से मशहूर थे जनाबे फातिमा बिन्ते हुसैन के पोते थे।

मन्सूर ने तमाम सादाते हसनी को क़ैद कर दिया और ख़ास तौर से अब्दुल्लाह अलमहज़ को बुढ़ापे की हालत में इतनी सख़्ती व जुल्म के साथ अकेले, तन्हाई में क़ैद किया कि अलहफीज़ अलअमान।

ज़ाहिर है कि हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ (अ0) दिली तौर पर इन लोगों से ग़ैर मुताल्लिक़ न थे चुनानचे हुआ यह कि जिस दिन औलादे हसन (अ0) को ज़न्जीरों से बाँधकर गर्दन में तौक़ और पैरों में बेड़ियाँ पहना कर बे कजावा ऊँटों पर सवार करके मदीने से निकाला गया। और यह क़ाफ़ेला इस हाल में मदीने की गलियों से गुज़रा तो इमाम जाफ़रे सादिक़ (अ0) इस मन्ज़र को देखकर बर्दाश्त न कर सके और चीखें मार–मार कर रोने लगे और इसके बाद 20 दिन तक सख़्त बीमार रहे। अब्दुल्लाह के दोनों बेटे मुहम्मद और इब्राहीम कुछ दिन पहाड़ों की घाटियों में छुपे रहे फिर ''मरता न तो करता क्या'' के मिस्दाक़ एक जमात को अपने साथ लेकर मुक़ाबले के लिए तैयार हुए इस मौक़े पर यह वाक़ेआ याद रखने वाला है कि आम राय मुहम्मद के साथ इस हद तक महसूस हो रही थी कि इमामे अबुहनीफा और मालिक ने नफ्से ज़किय्यः की हिमायत और मदद के लिए फतवा दिया। मगर हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ (अ0) अपनी ख़ुदादाद बसीरत से बावजूद तमाम जज़्बाती तक़ाज़ों के इस मुहिम से अलग रहे। और आप ने अपने दामन को इस कशमकश से बिलकुल बचाए रखा। आप जानते थे कि यह मुहिम वक़्ती हालात की बिना पर मजबूरी के तौर पर शुरु की गई है जिसके पीठ पीछे कोई बुलन्द मक़सद नहीं है न इससे कोई नतीजा निकलने वाला है लेकिन मैंने अगर इसका किसी तरह भी साथ दिया तो इस तामीरी ख़िदमत का भी जो मैं मआरिफे आले रसूल (स0) की इशाअत के तौर पर अन्जाम दे रहा हूँ, दरवाज़ा बन्द हो जाएगा।

यह बेपनाह बर्दाश्त और सब्र ही है जो उनके बाप दादाओं में नज़र आ रहा था और वह आम इंसानों के बस की बात नहीं है।

□□□